गोवा की झाँकी

डॉ. इशरत खान

भारत के पश्चिमी तट पर बसा गोवा प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण प्रदेश है। इसके उत्तर में महाराष्ट्र है तो दक्षिण में कर्नाटक राज्य है। पूर्व में आंध्रप्रदेश है तो पश्चिम में अरब सागर की लहरें गोवा का स्वागत, अभिनंद करती प्रतीत होती हैं।

गोवा के निर्माण के संबंध में दो कथाएँ प्रचलित हैं। आज जिस प्रदेश को गोंय या गोवा के नाम से जाना जाता है, उसको 'गोमंतक' नाम से जाना जाता था। कहते हैं कि परशराम ने बाण मारकर जिस प्रदेश का निर्माण किया उसका आकार सूप जैसा था। इस आरण्यायिका के आधार पर 'गो' का अर्थ 'बाण', 'म' का अर्थ 'मारना' और जहाँ बाण का अन्त होता है, वह गोमन्त शब्द कहलाता है। उसकी प्रशंसा में क शब्द जोड़ा जाता है। इस प्रकार सम्पूर्ण शब्द बना, गोमन्तक। कुछ विद्वान इसे 'परशुराम क्षेत्र' भी कहते हैं।

भारत देश तो १९४७ में आजाद हो गया था लेकिन भारत का ही एक भाग गोवा दासता की जंजीरों में जकड़ा रहा। यहाँ पुर्तगालियों का राज था। राममनोहर लोहिया, जवाहरलाल नेहरू और गोवा के स्वतंत्रता सेनानियों के अथक प्रयास से गोवा १४ दिसम्बर १९६१ में आजाद हुआ। इसके पश्चात गोवावासियों के प्रयत्नों से ३० मई १९८७ को गोवा को राज्य का दर्जा मिला। भारतीय संविधान में कोंकणी को अष्ट्म अनुसूची में सम्मिलित किया। इस प्रकार केन्द्र सरकार कोंकणी भाषा को समृद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

गोवा समुद्री किनारों, मंदिरों और गिरिजाघरों का प्रदेश है। यहाँ की लोक-संस्कृति की अपनी अलग एक पहचान है। गोवा का फोंडा शहर, मंदिरों का शहर कहा जा सकता है। फोंडा स्थित श्री मंगेश का मंगेशी मंदिर, गोवा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मंदिर है। एक पहाड़ी के बगल में स्थित यह मंदिर छोटा होते हुये भी अत्यन्त प्रभावशाली है।

कहा जाता है कि एक बार भगवान शिव हिमाचल से कहीं चले गये थे। उन्हें पुनः पाने के लिये पार्वती से काफी दिनों तक तपस्या की। पार्वती की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव जी सिंह के रूप में उनके सामने प्रकट हुये। सिंह को देखकर पार्वती ने चीत्कार किया- त्राहिमाम् गिरीश। इस चीत्कार को सुनकर शिव अपने असली रूप में प्रकट हुये। बाद में उन्हें 'मंगीश' के रूप में पूजा जाने लगा। शिवभक्तों ने इस मंदिर की स्थापना मंगीश रूपी शिव की आराधना के लिये की।

फोंडा से दो मील दूर मुख्य मार्ग पर गोवा के तीन अन्य मंदिर स्थित हैं- श्री शान्तादुर्गा मंदिर, श्री रामनाथ मंदिर और श्री महालक्ष्मी के मंदिर।

कहते हैं कि एक बार शिव और विष्णु में भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध को रोकने के लिये ब्रह्मा जी ने देवी जगदम्बा से अनुरोध किया। इस युद्ध को सफलतापूर्वक रोक देने के कारण उन्हें श्री शांता दुर्गा कहा जाने लगा था। यह मंदिर उन्हीं की पूजा के लिये कई सौ साल पहले बनाया गया था।

हर साल दिसम्बर के महीने में देवी शांता दुर्गा की जात्रा निकलती है। इस जात्रा में भाग लेने वाले भक्तों को देवी के दर्शनों के अलावा मंदिर के आसपास फैली प्राकृतिक सुषमा को देखकर भी प्रसन्नता होती है।

बन्दोरा स्थित श्री नागेश का मंदिर गोवा के सबसे पुराने मंदिर में से है। १४१३ के शिलालेख में वादिवड़े (बन्दोश का मूल नाम) में नागेश मंदिर होने का उल्लेख है। 'नागेश' शब्द नाग-ईश से बना है। गोवा में झरनों को 'नागझरी' भी कहा जाता है। क्योंकि वहाँ पहले नाग बहुत पाये जाते थे। शायद उन्हें प्रसन्न रखने के उद्देश्य से ही उन्हें ईश मानकर उनकी पूजा की प्रथा प्रारम्भ हुई। पुर्तगालियों ने गोवा के कई मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, लेकिन नागेश मंदिर को वे छू भी नहीं पाये। इस मंदिर की शिल्पकला देखते ही बनती है। सिरोद स्थित श्री कामक्ष का मंदिर प्राचीन न होते हुये भी हिन्दू भवन निर्माण कला की याद दिलाता है।

इसके अतिरिक्त श्री म्हाल्सा मंदिर, श्री सप्तकोटेश्वर का मंदिर, बिड्डाबड़ी और दत्त मंदिर, श्री मल्लिकार्जुन मंदिर, श्री दामोदर मंदिर, श्री कालिकादेवी मंदिर, श्री नरसिंह मंदिर, श्री मारुति मंदिर और देवकी-कृष्ण मंदिर भी महत्वपूर्ण हैं।

भवन-निर्माण कला की दृष्टि से गोवा के कुछ गिरिजाघर अनुपम हैं। लोगों का ऐसा कहना है कि इतने सुन्दर गिरिजाघर यूरोप में भी

शायद ही हों। गोवा का भव्यतम गिरिजाघर है- 'सि प्रिमेसियल दि गोवा' या 'सि कैथड्रल'। भव्यतम होने के अतिरिक्त यह गोवा का प्राचीनतम गिरिजाघर है। गोवा का यह अकेला गिरिजाघर है, जहाँ रोज बड़े पैमाने पर धार्मिक समारोह या धर्मोपदेश होते हैं। गोवा की भूमि पर यह पहला गिरिजाघर था।

१६७५ में गोवा की यात्रा करने वाले विख्यात यूरोपीय पादरी डॉ. फ्रायर ने कहा था- "हमारी जोड़ का गिरिजाघर कम से कम ब्रिटेन में तो नहीं है।" गिरिजाघर में तीन बड़े सदर दरवाजे हैं। इसका बाहरी निर्माण आधा तस्कनी और आधा डोरिक, निराली वास्तु शैली में हुआ। अन्दर का भाग कोरिथी वास्तुकला से निर्मित है।

इस गिरिजाघर के निर्माण की कल्पना अल्बुकर्क के मन में तब आई थी जब उसने मुसलमानों के हाथ से पुराना गोवा जीता था। इस जीत के बाद, अल्बुकर्क ने अपने सहयोगियों का आलिंगन किया और फिर 'सांता कातारीना' का आभार व्यक्त किया। 'सांता कातारीना' नामक संतिन की याद में होने वाले त्योहार के दिन ही आल्बुकर्क को विजय मिली थी।

इस विजय की खुशी में आल्बुकर्क ने प्रतिज्ञा की कि वह सांता कातारीना के सम्मान तथा गोवा विजय की याद में उस स्थान पर जहाँ वह खड़ा था, एक बड़ा गिरिजाघर बनायेगा। इसीलिये इसके दरवाजे पर एक शिला लगाई गई, जिस पर लेख है- 'मुसलमानों पर विजय प्राप्त कर, १५१० में सांता कातारीना के शुभदिन गर्वनर आर्फेस द अल्बुकर्क ने इस दरवाजे में प्रवेश किया।' पूरे गिरजे को बनने में ७५ से अधिक वर्ष लगे थे। इस भव्य गिरजे ने पुर्तगालियों का उत्थान भी देखा है और पतन भी। इसके अतिरिक्त सेंट फ्रांसिस का कान्वेंट, सेंट आगस्टाइन का गिरिजाघर, पिलार का गिरिजा और मठ, सेंट मोनिका का कान्वेंट, सेंट पॉल्स कालेज, अवर लेडी ऑफ रोजरी, गोवा का प्रवेश द्वार आदि चर्चित गिरिजाघर हैं।

गोवा में अनेक दर्शनीय स्थल हैं। गोवा के रमणीय समुद्र तट पर्यटकों के आकर्षक का केन्द्र बने हुये हैं। इनमें कलंगूट समुद्र तट, कोलवा समुद्र तट, बागतूर समुद्र तट, बाग समुद्र तट और मैन्द्र समुद्र तट अत्यन्त चर्चित हैं। डोना पोला में स्थित विश्वविख्यात एवे फारिया की प्रतिमा एक अन्य महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है। विश्व के कोने-कोने से लोग यहाँ आते हैं और इन दर्शनीय स्थलों को देखकर आनन्दित होते हैं।

गोवा के निवासी अत्यन्त कलात्मक रुचियों के लोग हैं। गायन, चित्रकला, शिल्प, वादन आदि कलाओं के सभी क्षेत्रों में गोवावासियों ने भारतदेश में ही नहीं, विदेशों में नाम कमाया है। इसका कारण यह है कि कला गोवानिवासियों की प्रकृति में ही है। राष्ट्रपति पदक प्राप्त करने वाली सुश्री केसरबाई केरकर, मोगबाई कुर्डीकर, लता मंगेशकर, आशा भोंसले जैसी प्रथम श्रेणी की गायिकाएँ, लक्ष्मणराव पर्वतकर, विष्णुपंत शिरोडकर, कामू मंगेशकर जैसे प्रतिभाशाली वादक और चिमुलकर, दलाल, मारियो, लक्ष्मण पै, मुलगांवकर जैसे उत्कृष्ट चित्रकार तथा रायल अकादमी का पदक प्राप्त करने वाले शिल्पकार 'रा.प. कामत' आदि हमारे देश की प्रतिभाएँ, गोवा की देन ही हैं।

गोवा में शिक्षा और कोंकणी साहित्य की स्थिति बहुत ही अच्छी है। राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार-प्रसार खूब हो रहा है। गोवावासी हिन्दी खूब बोलते हैं, समझते हैं और इस भाषा का बहुत सम्मान करते हैं। यहाँ की 'गोमंतन राष्ट्रभाषा विद्यापीठ' संस्था, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

गोवा का मुख्य भोजन है- चावल और मछली। गोवा समुद्रतटीय भाग होने के कारण यहाँ बहुत मात्रा में मछली मिलती है। सब्जी और अन्य अनाजों के लिये गोवा का दूसरे राज्यों पर निर्भर रहता है। मांसाहारी के साथ-साथ यहाँ पर शाकाहारी पकवान भी चाव से खाये जाते हैं। यहाँ के गणेश चतुर्थी, क्रिसमस और ईद आदि प्रमुख त्यौहार हैं। चतुर्थी के दिन शुद्ध शाकाहारी भोजन बनता है जबकि क्रिसमस, ईद आदि पर शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन बनते हैं।

गोवा पर पुर्तगालियों के शासन करने के बावजूद यहाँ की लोक संस्कृति नष्ट नहीं हुई। आज भी अनेक गाँवों में विभिन्न प्रकार के नृत्य होते हैं। ये नृत्य त्योहारों के अवसरों पर अधिक होते हैं। 'फुगड़ी' एक ऐसा नृत्य है जो स्त्री और पुरुष दोनों ही करते हैं। फुगड़ी के अनेक प्रकार हैं। इनमें खड़ी फुगरी, गोल फुगड़ी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। इसके अतिरिक्त मांडो नृत्य, गावडा नृत्य, गुणबी नृत्य और धनगर नृत्य भी गोवा के मशहूर नृत्य हैं। नृत्य के साथ ही गोवा में अनेक प्रकार के लोकनाट्य भी होते हैं। 'दशावतारी' लोकनाट्य गोवा के त्योहारों का प्रमुख आकर्षण है। क्रिश्चन समाज का 'तियात्र' भी गोवा का लोकप्रिय लोकनाट्य है। इस 'तियात्र' का विषय अधिकतर सामाजिक समस्याओं से संबंधित होता है।

गोवा में हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चन सभी प्रेमभाव से रहते हैं। गणेश चतुर्थी, क्रिसमस और ईद सभी लोग मिलकर मनाते हैं। 'गोआनी' शब्द का उच्चारण करते ही ऐसे व्यक्ति की तस्वीर सामने आती है, जो मेहनती होने के साथ ही गुणी और हँसमुख भी हैं। ज्यादातर गोआनियों का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक होता है। वे जिन्दादिल होते हैं और जीवन से प्यार करते हैं। जीवन उनके लिये 'पलायन' की चीज नहीं, सुखपूर्वक भोगने की चीज है। वे अच्छा खाना और अच्छे कपड़े पहनना पसंद करते हैं। शराब पीने से उन्हें कोई परहेज नहीं है। सुखी जीवन के प्रेमी होने के नाते उन्हें नाचने-गाने, अभिनय करने, लिखने तथा चित्रकारी से प्रेम होता है।

गोवा में प्रत्येक वर्ष देशी-विदेशी पर्यटक आते हैं। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर आनन्दित होते हैं।

पता- रीडर, हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय